तृतीय अध्याय

"ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना ।"

३.१ चेतना शब्द का अर्थ।

३.२ राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य।

३.३ नेताओं में राष्ट्रीय चेतना।

३.४ आधिकारियों में राष्ट्रीय चेतना।

३.५ प्रशासकों में राष्ट्रीय चेतना।

३.६ सामान्य लोगों में राष्ट्रीय चेतना।

३.७ राष्ट्र की प्रगति में योगदान।

निष्कर्ष

३.१ 'चेतना' शब्द का अर्थ :

'हिन्दी साहित्यकोश' में चेतना शब्द का अर्थ इस तरह दिया गया है - "चेतना - चेतन मानसकी प्रमुख विशेषता चेतना है, अर्थात वस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान। चेतना की परिभाषा कठिन है, पर इसका वर्णन हो सकता है। चेतना की प्रमुख विशेषताएँ हैं,निरन्तर परिवर्तनशीलता अथवा प्रवाह, इस प्रवाह के साथ-साथ विभिन्न अवस्थाओंमें एक अविच्छिन्न एकता और साहचर्य। चेतना का प्रभाव हमारे अनुभव वैचित्र्यसे प्रमाणित होता है और चेतना की अविछिन्न एकता हमारे व्यक्तिगत तादात्म्य के अनुभवसे। विभिन्न विषयों की अलग-अलग समयपर चेतना होनेपर हम सदा यह भी अनुभव करते हैं कि, "मैंने अमुख वस्तु देखी थी।" यदि हमारी चेतना अखण्ड और अविच्छिन्न न होती तो यह अनुभव हमें न होता। लेकिन यह खअण्डता और अविच्छिन्नता साहचर्यसेही सम्भव होती है। विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं में साहचर्य (अथवा आसंग) के द्वारा इतना घनिष्ठ संबंध हो जाता है कि वे मिलकर चेतना का एक अंग बन जाती है। मानसिक संघर्ष अत्याधिक दमन और भावात्मक आघातों से ये साहचर्य नष्ट भी हो जाते हैं और तब चेतना भी बिखरी-बिखरी-सी हो जाती है और व्यक्तित्व खण्डित। चेतना में साहचर्य नष्ट होने की अनेक मात्राएँ हो सकती हैं, यदि कम मात्रा में हो तो कोई विशेष व्यवहार, कोई विशेष मानसिक क्रिया सम्पूर्ण चेतना से वियोजित हो जाती है, पर व्यक्तित्व के लिए गम्भीर समस्या नहीं उठती। पर यदि अधिक मात्र में हो तो बहुव्यक्तित्व, खण्डित व्यक्तित्व आदि रोग हो जाते है।"१ इससे एक बात स्पष्ट होती है कि चेतना का संबंध मनुष्य के व्यक्तित्व से होता है। इसी संदर्भ में 'हिन्दी साहित्य कोश' में आगे लिखा है - "चेतना शब्द का उपयोग प्रायः उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक अर्थ में ही होता है, पर कभी-कभी इसका प्रयोग दार्शनिक अर्थ में भी हो सकता है। विज्ञानवादी और प्रत्ययवादी दार्शनिक चेतना या विज्ञान का शाश्वत और एकमात्र सत्ता मानते हैं। इस अर्थ में 'चेतना' शब्द 'आत्मा' समानार्थक हो जाता है। परन्तु साहित्य में और दर्शन में भी इस अर्थ में प्रायः 'चैतन्य' शब्द का उपयोग किया

---

१. धीरेंद्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश - भाग-१(पारिभाषिक शब्दावली) पृष्ठ-२४७

जाता है, चेतना शब्द सामान्य मनोवैज्ञानिक अर्थमें ही अधिक आता है।"१ अलग अलग शब्दकोशों में चेतना शब्द का अर्थ इस तरह दिया गया है – 'हिन्दी विश्वकोश' में चेतना शब्द का अर्थ दिया गया है – " सावधान होना, चौकन्ना होना। होश में आना। विचारना, सोचना, ध्यान देना, समझना।"२

'तुलसी शब्द सागर' में चेतना शब्द का अर्थ दिया गया है – "बुध्दि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति सुधि, चेतनता, संज्ञा, होश।"३

'बृहत हिन्दी पर्यायवाची शब्दकोश' में इस शब्द का अर्थ बताया गया है – " संवेदना, संज्ञा, ज्ञान, प्रतिबोध, सजीवता, सप्राणता, बुध्दिमत्ता, तर्कना शक्ति, चेतस।"४

'संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर' में चेतना शब्द का अर्थ है – "चैतन्य संज्ञा, होश, ज्ञान, बुध्दि, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, समझ, स्मृति, याद, जीवन।"५

'नालन्दा विशाल शब्द सागर' में. चेतना का अर्थ दिया गया है – "बुध्दि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, चेतनता, संज्ञा, होश।"६

'आधुनिक हिन्दी शब्दकोश' में उपर्युक्त सारे शब्दकोशों से भी आसान अर्थ दिया गया है। इस शब्दकोश के अनुसार चेतना शब्द का अर्थ है – " मन की वह वृत्ति जो जीव को आंतर और बाह्य का ज्ञान कराती है; वह स्थिति जो प्राणी के चेतन होने का प्रमाण देती है। संवेदना, संज्ञा, ज्ञान, प्रतिबोध, सजीवता, बुध्दिमत्ता, तर्कनाशक्ति, चेतस।"७

---

१. धीरेंद्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश – भाग-१(पारिभाषिक शब्दावली) पृष्ठ-२४७

२. संपा.-नगेंद्रनाथ वसु – हिन्दी विश्वकोश – पृष्ठ-४८९

३. संपा.-स्व.पं. हरिगोविंद तिवारी – तुलसी शब्दसागर – पृष्ठ-१५१

४. संपा.- गोविंद चातक – बृहत हिन्दी पर्यायवाची शब्दकोश – पृष्ठ- १५५

५. संपा.- रामचंद्र वर्मा – संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर – पृष्ठ-३३०

६. संपा.- श्री नवलजी – नालन्दा विशाल शब्दसागर – पृष्ठ-३८८

७. संपा.- गोविंद चातक – आधुनिक हिन्दी शब्दकोश – पृष्ठ-२११

३.२ राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य -

इन्सान में अपने देश के प्रति श्रध्दा, निष्ठा, प्रेम, स्वाभिमान होना उसकी राष्ट्रीय चेतना का परिचायक है। वक्त आनेपर इन्सान की देशभक्ति स्पष्ट हो जाती है। सभी लोग देशभक्त होते हैं ऐसी बात नहीं। लेकिन देश में गद्दारों के साथ-साथ देशभक्त भी होते हैं। जब भी देशपर कोई आँच आ जाती है तो देशप्रेमी लोग आपसी मतभेदों को दूर रखकर एक हो जाते हैं और बाहरी आक्रमण को अपनी जानपर खेलकर रोक लेते हैं। यहींपर स्पष्ट होती है इन्सान की राष्ट्रीय चेतना।

अपने देश के लिए पूरे परिवार के साथ मिट जाने की भावना ही राष्ट्रीय चेतना है। आपसी रिश्तें, जजबात, स्वार्थ, सपने आदि इन्सान के साथ जुडी कई भावनाओंसे ऊपर होती है राष्ट्रीय चेतना। जिस शक्स में राष्ट्रीय चेतना याने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान, निष्ठा तथा किसी भी कीमत पर देशपर आँच भी न आने देने की भावना होती है वह शक्स सही मायने में राष्ट्रीय चेतना से युक्त होता है।

हर युग में पैदा होनेवाले इन्सान के मन में अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और राष्ट्रीय चेतना को बढावा देते हैं उस इन्सान पर होनेवाले संस्कार तथा जहाँ वह पलता फूलता है वहा का परिवेश। आगे उसकी इसी चेतना को और बढावा देता है इतिहास और साहित्यकार, कोई राष्ट्रीय सवालों को लेकर फिल्म बनानेवाला निर्देशक या इन्हीं सवालों को लेकर नाटक लिखनेवाला कोई नाटककार। समाज के दायरे में होने से वह शक्स साहित्य, संस्कृति, मनोरंजन आदि बातों से परिचित होकर अपने कुछ विचार बनाता है। वह एक सचेतन इन्सान बन जाता है। ऐसे इन्सानों को साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान पैदा करके राष्ट्र को सहयोग देने के लिए उकसाता है। इस तरह किसी लेखक की भावना साहित्य के जरिए लोगोंतक पहूँच जाती है और देश के हित में जो बात समझकर लेखक सचेत हुआ है वही बात वह अन्य लोगोंतक पहूँचाकर उन्हें भी सचेत कर देता है। यही सचेत होना और वह राष्ट्र के हित में सचेत होना राष्ट्रीय चेतना है। तात्पर्य यह कि इन्सान में होनेवाली भावना को और सचेत करके उसे राष्ट्र के हित में मोड देनाही राष्ट्रीय चेतना है।

३.३ नेताओं मे राष्ट्रीय चेतना –

नेता का मतलब होता है नेतृत्व करनेवाला व्यक्ति। नेता के प्रति समुह को बहुत बडा विश्वास होता है। समुह, राष्ट्र, देश इतनाही नहीं किसी वर्ग का प्रतिनिधि भी नेता कहलाता है। नेता अगर सच्चा हो, निडर हो कर्तव्यतत्पर हो तो वह समुह या राष्ट्र प्रगति पथपर होता है। एक समूह की गाडी का महत्वपूर्ण पूर्जा होता है नेता जिसके बिना गाडी चलही नहीं सकती। सच्चा नेता हमेशा पूरे समूह का विचार लेकर ही आगे बढता है। उस समुह के कल्याण के लिए वह अपनी जानपर खेलता है, अपने आपको मिटा डालता है। वह अपने निश्चयपर अपने आपको कुर्बान कर देता है। जैसे हमारा इतिहास गवाह है कि यहाँ 'बाबू गेनू' जैसे देशभक्त नेता भी हो चुके हैं। नेता किस तरह का होना चाहिए? उसके कर्तव्य क्या होते हैं? आदि अच्छि नेताओं में होनेवाली तमाम बातों को ज्ञानदेवजीने अपने पात्रों के माध्यम से बताया है। ज्ञानदेवजी के 'वतन की आबरु' नाटक में इलाहीबख्श एक ऐसा नेता है जो अपने पूरे परिवार की तबाही तथा खुद की जान की बाजी भी देश के लिए लगाता है। इलाहीबख्श गाँव का मुखियाँ है और वह मुसलमान है। इसी बातका फायदा उठाकर पाकिस्तानी मुसलमान आकर उसे जेहाद और मजहब की बातें बताकर तथा धरतीपर बसे सारे मुसलमान एक कहकर राज मालुमात करना चाहते हैं। लेकिन इलाहीबख्श उनके हाथों से मार खाता है पर कोई भी राज नहीं बताता। जब उसकी छोटी बेटी को उठाकर लाया जाता है तब वह पूछती है कि अब्बा आप उनकी बात क्यों नहीं मानते? अपनी बेटी को इलाहीबख्श समझाता है – " आज हमसे कहा जा रहा है कि मुसलमान–मुसलमान सब भाई–भाई है। कल हमें हथियार दिए जाऐंगे और जेहाद की जहरीली नकाबे लगाकर हमें भडकाया जायेगा, फिर हमसे कहा जाएगा, हिन्दू काफिरों का सफाया करो और एक दिन वह तमाम मुल्क उनके पास होगा, जो हमेशा हमारा रहा है। बेटी वे जमीन के लिए लड रहें हैं, हम उसुलों के लिए। देखना यह है कि, तानाशाही और जमूहरियत की लडाई में फतह किसकी होती है। अच्छाई और बुराई के इस जंग में दो–चार गाँवों का उजड जाना, सौ–दो–सौ आदमियों का मरना कोई मायने

नहीं रखता। शर्त यह है कि हम मजहब का सही मतलब समझे और आखरी साँसतक अपने उसुलों पर अडे रहें।"१

जब दुश्मन उसकी बेटी को गोली मारने की धमकी देते हैं तो इलाहीबख्श फक्र के साथ कहता है की, " उसके लिए क्या कम फक्र की बात है कि वह मौलाना इलाहीबख्श की बेटी है, जिसने दुश्मन के खूनी हाथों से अपने हाथ नहीं मिलाए, चन्द जिन्दगियाँ बचाने के लिए जिसने अपने सच्चे उसूल नहीं छोडे।"२ अपने समाज के लोगों से हाथ ना मिलाकर देश की खातिर अपना घर तथा खुद की बली देनेवाला इलाहीबख्श नेता हमारे भारत देश में ही हो सकता हे। सिर्फ लोगों ने चुने हुए नेताही अपने फर्ज के लिए जान देते है या शिक्षित लोगही नेतागिरी निभाते हैं इस बात को ज्ञानदेवजीने अपने 'नेफा की एक शाम' नाटक में झुटला दिया है। इस देश के कोने कोने में रहनेवाले सामान्य नागरिक तथा नेतामें भी राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी हुई नजर आती है। 'नेफा की एक शाम' नाटक का नेता गोगो तथा देवल पहाडी में बसनेवाले आदिजातियों के होकर भी अपनी जानपर खेलकर सियाँग नदी का पुल जिसपर से चीनि फौज आनेवाली होती है, रात को उडाते हैं। जिसमें देवल अपना भाई नीमो के साथ शहीद होता है। अपनी सारी खुशियाँ, घरबार, भावनाएँ सबको पीछे छोडकर चीनियों के खिलाफ लडनेवाले गोगो का यह कथन देखिए - " दरअसल हमें न खुशी होनी चाहिए न रंज। जो काम हमने सर माथेपर लगाया है उसमें रंज और खुशी को कोई जगह नहीं जब तक हमारा काम खत्म नहीं हो जाता तब तक हमें इन सब खयालों से ऊँचा रहना होगा। हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ ..... यह सिर्फ शुरुआत है... शुरुआत।"३ गोगो का उपर्युक्त कथन इस बात का प्रमाण है कि जब तक युध्द स्थिति खत्म नहीं हो जाती तब तक निजी बातों को कोई महत्व नहीं। ज्ञानदेवजी के नाटक के पात्र तन-मन से राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित हैं। 'वतन की आबरु' नाटक का नायक इलाहीबख्श पाकिस्तानी मेजर जावेद से जब उनकी ताकत की बात

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - वतन की आबरु - पृष्ठ - ८३,८४

२. - वही - पृष्ठ - ८५

३. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - नेफा की एक शाम - पृष्ठ - १११

करता है तो सुनाता है - " तुम्हारी ताकत का अन्दाजा तो इस मुल्क का जर्रा-जर्रा लगाएगा जिसपर तुमने अपने नापाक कदम रख्खे हैं। मगरिबी मुल्कों से खैरात के हथियार पाकर तुमने समझ लिया कि तुम फातेह हो। जेहाद और इस्लाम के नकली चेहरे लगाकर तुम गैरों के जमीनपर अपने खूनी पंजे गडाना चाहते हो?"१

हर नागरिक का सर ऊँचा करने के लिए वह यह भी कहता है - " घबरा मत जालिम जोरियाँ क्या, तमाम कश्मीर के लोग तेरा साथ देंगे(दाँत पीसकर) मैदाने जंग में। वक्त आने दो।"२

दुश्मनों की खैरात में पाई हुयी ताकत का पर्दाफाश करके तथा अपने और अपने लोगों के प्रति आत्मविश्वास को दिखाकर इलाहीबख्श ने इस बात का सबुत दिया है कि यहाँ का हर नागरिक देश के लिए कुर्बान होने के लिए तैयार है। इसी नाटक में मेंजर जावेद जब यह कहता है कि तुम्हारी लडकियों को लाने के बाद तुम्हारा इरादा बदल जायेगा तो वह कहता है - " यह तुम्हारी गलत फहमी है। अगर मेरी लडकियों को मेरे सामने कत्ल कर भी दो, तो भी मैं अपनी बात से नहीं हिल सकता।"३ इस बातसे स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ के नेता देश के लिए रिश्तेदारों की कुर्बानी भी बर्दाश्त कर सकते हैं। इन नेताओं में राष्ट्रीय चेतना इतनी हैं कि राष्ट्र के लिए अपनी सारी खुशियाँ, घर-बार,भावनाएँ सबको पीछे छोडते हैं तथा अपने आपको मिटा डालने में भी पीछे नही हटते। तात्पर्य यही है कि ज्ञानदेवजीने अपने नाटकों में इलाहीबख्श, देवल, गोगो जैसे नेताओंको चित्रित करके यह बताने की कोशिश की है कि भारत में देशप्रेमी नेता संख्या में कम नहीं है। अपने देश के लिए जानपर खेलनेवाले नेता भारत देश में हैं। अतः ज्ञानदेवजीने अपने नाटकों में नेताओं का आदर्श रुप प्रस्तुत किया है। ताकि भूले भटके, गद्दार, नेताओं में भी इन नेताओं को देखकर परिवर्तन आए। राष्ट्रीय चेतना से युक्त नेता ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में मिलते हैं।

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - वतन की आबरु - पृष्ठ - ६८

२. - वही - पृष्ठ - ७७

३. - वही - पृष्ठ - ७८

३.४ अधिकारियों में राष्ट्रीय चेतना

कुछ इमानदार अफसरों में भी राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी हुयी नजर आती है। 'नेफा की एक **शाम** नाटक में भारतीय फौजी जब जख्मी होता है तो मरनासन्न अवस्था में होकर भी वह खुद को दुसरों के मुँह से 'बेचारा' तथा 'बीमार' शब्द सुनना पसन्द नहीं करता। जब उसके बीमार होने का एहसास मिलाकर मातई कहती है कि शायद बर्फिला तूफान आनेवाला है, तो फौजी जवाब देता है,"बर्फिले तूफानों के कालीनपर हमारे पैर जलते नहीं, क्योंकि जो तूफान हमारे दिलों में है, वह सबसे बडा है।"१ हिन्दूस्थानी फौजी का स्वाभिमान बनाए रखते हुए वह यह भी कहता है, "मैं हिन्दूस्थानी फौज का जवान हूँ। हम खुद किसी की कोई चीज नहीं छीनते हैं। हम सिर्फ छिनी हुई चिजें वापस लेते हैं।"२ नेफा की एक शाम नाटक के फौजी का उपर्युक्त कथन राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत होनेवाले हर हिन्दूस्थानी फौजी का कथन है।

३.५ प्रशासकों में राष्ट्रीय चेतना -

आजादी के पहले प्रशासक राजा या सुलतान थे। ज्ञानदेव अग्निहोत्री के 'चिराग जल उठा' नाटक में नायक टिपू सुलतान एक ऐसा प्रशासक है जो देश के लिए ही केवल जी रहा है और देश के लिए ही शहीद होता है। सिर्फ टिपूही नहीं बल्कि टिपू के वालिद हैदरअली जैसे प्रशासक भी मरते-मरते यह संदेश देते हैं - "गुलामी की जिन्दगी से आजादी की मौत कही बेहत्तर है। अगर जिन्दा रहना चाहते हो मेरे बेटे, तो मरना सिखो।"३ यही संदेश जो राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है, टिपू मरते वक्त अपने बेटों को भी देते हैं। शर्त के मुताबिक जब टिपू अपने दोनों बेटों को सुलह के लिए अंग्रेजों को देना चाहता है तो रानी रूही रोक डालती है। लेकिन टिपू यह कहकर,"हमें औलाद से ज्यादा मुल्क प्यारा है।"४ शहजादों को विदा करता है। इन्सान अपने आपको मारकर अपनी औलाद बचाता है। लेकिन यहाँ तो खुद के लिए नहीं बल्कि राष्ट्रहित

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - नेफा की एक शाम - पृष्ठ -८८

२. - वही - पृष्ठ - ८८

३. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - चिराग जल ऊठा - पृष्ठ - २९

४. - वही - पृष्ठ - ७५

के लिए अपनी औलादों को मौत के मुँह मे ढकेलनेवाला टिपू जैसा प्रशासक इसी राष्ट्र में हो चुका है। राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित टिपू जब किलेपर हमला होता है तो दीवानसाहब को सुलतान बनाकर रणभूमिमें कुद जाता है। रानी रोते हुए उनका रास्ता रोकती है तो टिपू कहता है -

"आसुओं की दीवार खडी करके मेरा रास्ता मत रोको रूही बेगम। इस वक्त मुल्क को आसुँओं की नहीं खून की जरुरत है। मैं उसे खून देने जा रहा हूँ। खुदा से दुआ करता हूँ कि बदले में हमें आजादी मिले। तुम भी यही दुआ करो... अलविदा। खुदा हाफिज।"१ जजबात, रिश्ते, गद्दी आदि बातों को कोई भी महत्व ना देते हुए केवल राष्ट्र के लिए शहिद होनेवाले टिपू जैसा प्रशासक राष्ट्रीय चेतना का मील का पत्थर है। टिपू के पिता हैदरअली मरने से पहले टिपू को सम्बोधित करते हुए कहते हैं - "टिपू! मेरे बेटे ...मैं जा रहा हूँ। लालबाग में दफन होने की आखिरी ख्वाहिश और मादरे वतन की इज्जत तुम्हारे हाथोंमे सौंपकर...आह! आजादी की जंग उस वक्त तक जारी रखना, जब तक खून का आखिरी कतरा भी तुम्हारे बदन में रहे। यह मुल्क हमारा है और हमारा रहेगा। इक पाक जमीन के एक-एक इंच के लिए सौ-सौ जाने कुर्बान कर दो। गुलामी की जिन्दगी से आजादी की मौत कही बेहत्तर है। अगर जिन्दा रहना चाहते हो मेरे बेटे, तो मरना सीखो।"२ हैदरअली का यह राष्ट्रीय चेतना भरा सन्देश न कि सिर्फ टिपू को सम्बोधित करके है बल्कि उन नौजवानों के लिए है जो आजादी की प्राप्ति के उपरान्त अपने राष्ट्र की सोचने के बदले केवल अपनी सोचते हैं। यही संदेश उन नौजवानों को भी सजग कर देता है जो राष्ट्र के प्रति शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति अपनाते हैं। तात्पर्य यही है कि टिपू सुलतान, हैदरअली जैसे प्रशासक बनेंगे तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल है। इसी बात को ज्ञानदेवजी अपने पात्रों के माध्यम से स्पष्ट करना चाहते हैं।

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - चिराग जल उठा - पृष्ठ - १०६

२. - वही - - पृष्ठ - २९

३.६ सामान्य लोगों में राष्ट्रीय चेतना -

सिर्फ नेता, अधिकारी, प्रशासक लोगों में ही राष्ट्रीय चेतना है ऐसी बात नहीं। ज्ञानदेवजी के हर नाटक में सामान्य से सामान्य लोगों में भी राष्ट्रीय चेतना दिखायी देती है। उनके "वतन की आबरु" नाटक की नायिका पशमीना अपने होनेवाले पति महबूब के बारे में जब जान जाती है तो कहती है - "मैंने ख्वाब में भी ना सोचा था कि मेरा होनेवाला शौहर गद्दार है। आज मुझे मालूम हुआ कि तस्वीर बनाने की आड में तुम खुफिया राज इकठ्ठे करते थे। छंब जाने के बहाने तुम दुश्मनों को खबरे पहूँचाते थे।"१ जब उसका होनेवाला पति गिडगिडाकर माफी माँगता है तो वह यह कहते हुए कि "माफ कर दूँ? (हँसती है) घबरा मत। मेरी गोलियाँ तुझे हमेशा के लिए माफ कर देगी, गद्दार। कमीने। दगाबाज।"२ अपने महबूब को गोलियों से भून डालती है। मुसलमान होकर भी अपने धर्म के लोगों से हाथ ना मिलाते हुए तथा अपने भविष्य को देश के ऊपर न्योछावर करते हुए अपने होनेवाले पति को गोलियों से भून डालने का फर्ज राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत होनेवाली पशमीना जैसी भारतीय नारी ही निभा सकती है। बच्चों से लेकर बुढोंतक ही नहीं अपितु पागल लोगों में भी राष्ट्रीय चेतना नजर आती है। 'वतन की आबरु' नाटक की एक पगली को जब दुश्मन गोली मारते हैं तो मरते मरते हुए वह कहती है - "तुमने.... तुमने मुझपर गोली चलाई यह क्या है? खून।(अपने खून से सने हाथों को देखकर अचानक हँसती है) इस खून का एक भी कतरा बेकार नहीं जाएगा... एक-एक खून बूँदका बदला हजार-हजार बूँदों से लिया जाएगा।"३ पगली में भी राष्ट्र के प्रति इतना विश्वास और आशावाद है तो होश-हवास में होनेवाले सचेतन इन्सान की बात ही और है। फिर वह उम्रसे केवल १६ वर्षीय रेशमा ही क्यों ना हो। 'वतन की आबरु' नाटक में १६ वर्षीय रेशमा अपने आपको मिटाना चाहती है पर अपनी बडी बहन को कोई भी राज कहने के लिए मना करती है। वह कहती है - "इन्हें कुछ भी न बतलाना, बाजी। अंजाम चाहे जो हो।"४

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - वतन की आबरु - पृष्ठ - ९६

२. - वही - पृष्ठ - ९७

३. - वही - पृष्ठ - ७४,७५

४. - वही - पृष्ठ - ११०

लेकिन रेशमा की फिक्र करते हुए पशमीना मजबूर होकर पता बताना चाहती है तो वह अपनी बडी बहन को समझाती है "और तुम्हे वो जिन्दगियाँ प्यारी नही जो मेरे जिन्दा रहने से मौत के मुँह मे चली जाएँगी? बाजी समझने की कोशिश करो।"१ यहाँ रेशमा जैसे बच्चों मे तक इतना राष्ट्रीय चेतना झलकती है। उसकी बडी बहन पशमीना इस बात की सबूत है कि भारतीय नारी राष्ट्र के लिए क्या कर सकती है। पशमीना दुश्मनों को खुफियाँ रास्ते ना बतलाने के बदले मे अपने पिता की हत्या देखती है। अपने होनेवाले पति को गोली मारती है और खुद भी दुश्मनो की गोली खाती है। लेकिन मरने से पहले पशमीना मेजर जावेद को सुनाती है - " हमारे वतन की आबरु इतनी सस्ती नही। हम न रहे तो क्या, कश्मिर जिन्दा रहेगा, हिन्दोस्तान जिन्दा रहेगा।"२ मरते मरते भी अपने दुश्मन को मुँहतोड जवाब देकर पशमीना राष्ट्रीय चेतना को उजागर करती है। रेशमा जब मरते हुए पशमीना का सर गोद में लेकर सिसकने लगती है तो पशमीना उसे कहती है, "रेशमा! तू क्या समझती है कि मैं मर गई? पगली तेरी पशमीना कभी नही मर सकती। खुदा से दुआ कर की हम अगले जन्म मे फिर इसी पाक जमीनपर पैदा हो और अपने वतनकी आबरु के लिए इसी तरह मरे।"३ भरी जवानी मे देश के लिए अपने आपको कुर्बान करना, जिसके साथ भविष्य के सपने देखे थे उसी को गद्दार निकलनेपर मार डालना तथा खुफियाँ रास्ते दुश्मन को ना बताकर अपने पिता के साथ शहीद होना और शहीद होते-होते फिर एकबार इसी जमीनपर पैदा होनेकी आखिरी ख्वाहिश बताना जैसी घटनाएँ राष्ट्रीय चेतना को प्रकट करने मे सक्षम है। पशमीना के जरिए लेखकने राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित उन स्त्रियो को उजागर किया है जो देश के लिए जी चुकी है। राष्ट्रीय चेतना को दिखाने मे ज्ञानदेवजीका 'वतन की आबरु' नाटक मील का पत्थर है।

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - वतन की आबरु - पृष्ठ - ११४

२. - वही - पृष्ठ - ११५

३. - वही - पृष्ठ - १२०

३.७ राष्ट्र की प्रगति में योगदान :

लेखक चाहे कोई भी क्यो ना हो जब वह किसी साहित्यकृति का निर्माण करता है, तो उसके पीछे उसका कोई ना कोई उद्देश जरुर रहता है। ज्ञानदेव अग्निहोत्री का हर नाटक उद्देश्यपूर्ण है। हर नाटक के जरिए उन्होने हमारे देश के लोगो को कुछ न कुछ संदेश देना चाहा है।

"माटी जागी रे" नाटक में उन्होंने खेतीप्रधान भारत देश में किसानोंपर आनेवाले संकट तथा उनके उपायोंपर प्रकाश देकर किसानों को सामुहिक खेती का मंत्र देकर नयी दिशा देने की कोशिश की है। उनके साथ-साथ उच्च-नीच, अमीर-गरीब का फासला मिटाकर नये जमाने के साथ कदम बढाने का संदेश भी उन लोगो को दिया है जो पुराने रीति-रिवाजों में अपने आपको जखडकर रखने मे धन्यता महसूस करते है।

'वतन की आबरु' नाटक में उन्होंने भारतीय मुस्लिम भाईयो को न्याय देने की कोशिश की है ओर लोगों को बताना चाहा है कि हिन्दू लोग जितना देश से प्यार करते हैं उतनाही प्यार यहाँ के मुस्लिमभाई भी करते हैं। यहाँ के मुस्लिम देश के लिए कुर्बान भी होते है तथा कुर्बान होते-होते यह इच्छा भी रखते हैं कि वे अगर दुबारा पैदा हो तो इसी पाक जमीनपर पैदा हो। इस नाटक में मुखिया इलाहीबख्श देश के लिए अपने आपको कुर्बान करते हैं। उनकी बेटी पशमीना भी अपने आपको कुर्बान कर देती है। लेकिन मरते वक्त वह अपनी छोटी बहनसे कहती है - "रेशमा! खुदा से दुआ कर कि हम अगले जन्म में फिर इसी पाक जमीनपर पैदा हो और अपने वतन की आबरु के लिए इसी तरह मरें।"१

पशमीना का उपर्युक्त कथन इस बात का सबूत देता है कि यहाँ मुसलमान अपने राष्ट्र को उतनाही चाहते हैं जितना कि हिन्दू। इस नाटक को लिखकर उन्होंने मुसलमानों के प्रति होनेवाली हिन्दुओंकी गलत फहमी को दूर करने की कोशिश की है।

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - वतन की आबरु - पृष्ठ-१२०

हमारे देश में हिन्दू-मुसलमान में हमेशा मन्दिर-मस्जिद तथा धर्म को लेकर दंगे छिड चुके थे और आज भी छिड रहे हैं। इन दंगों को लेकरही ज्ञानदेवजी ने 'दंगा' नाटक लिखा है। इस नाटक मे उन्होने हिन्दू-मुस्लिमों के आपसी सम्बन्ध तथा भाईचारे को दिखाकर इस बात को स्पष्ट करना चाहा है कि दंगे को छिडाने में न तो हिन्दू जिम्मेदार है और न ही मुस्लिम बल्कि वे लोग जिम्मेदार हैं जो इन दंगों को छिडाकर अपना फायदा कराना चाहते हैं। इस नाटक के बारे में जैड.ए.जौहर लिखते है - " सरकार वास्तव में राष्ट्रीय एकता की दिशा में कुछ करना चाहती है तो वह 'दंगा' जैसे नाटकों की सरपरस्ती करें। मंत्रियों के दौरे के कोरे भाषणोंसे अधिक यह नाटक अपना असर दिखा सकता हैं।"१

उपर्युक्त प्रतिक्रियाओंसे मिलती हुई प्रतिक्रियाएँ ज्ञानदेवजीके 'शुतुरमुर्ग' नाटक के बारे में प्राप्त होती हैं। गोविन्द चातक इस नाटक के बारे में लिखते है - " इस काल के अच्छे नाटकों में मुश्किल से कुछ नाम गिनाए जा सकते है जिनमें ज्ञानदेव अग्निहोत्री का शुतुरमुर्ग... उल्लेखनिय हैं।"२

'शुतुरमुर्ग' नाटक में उन्होनें भारत को आजादी मिलने के बाद खुदगर्जी नेताओंने तथा रिश्वतखोर अधिकारियोंने किस तरह देश को लूट लिया है और भारत को किस तरह खोकला किया है इसी बात को दिखाने की कोशिश की है। इसमे देश की वर्तमान समस्याओंको चित्रित करके देश की यथार्थ स्थिति को दिखाने की कोशिश की है। इसी नाटक के बारे में चन्दशेखर के विचार हैं कि - " यह नाटक जनहंता राजनीति, शुत्तुरदर्शन, सत्ता का जनविरोधी अनुष्ठान, सामान्य जनकी प्रवंचना है।"३ 'शुतुरमुर्ग' नाटक ज्ञानदेव अग्निहोत्री द्वारा लिखा गया शुतुरनगरी का नाटक ना होकर पूरे देश का आयना बन गया है। इस प्रतिक नाटक को लिखकर उन्होंने भारतीय जनता की आजादी के बाद की स्थिति, आधिकारियों तथा नेताओं का भ्रष्टाचार, प्रशासक तथा राजनीतिज्ञ लोगों की अपनी कुर्सी बचाने के लिए चली हुई खुदगर्जी आदि बातों का पर्दाफाश किया है।

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - दंगा - मुखपृष्ठ दो से उदधृत

२. गोविंद चातक - आधुनिक हिन्दी नाटक (भाषिक और संवादीय संरचना) पृष्ठ - ७३

३. चन्दशेखर - समकालीन हिन्दी नाटक:कथ्य चेतना - पृष्ठ ३५८

"चिराग जल उ ' उनका टिपू सुलतान के जीवनपर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। टिपू सुलतान राष्ट्र के लिए शहीद हो जाते हैं। उन्होने देशभक्ति तथा फर्ज के लिए अपने दो शहजादो कों अंग्रेजों के सुलह के मुताबिक उनके पास भेजकर अपने फर्ज का परिचय दिया है। इस नाटक से ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने इस बात की ओर संकेत किया है कि आजादी से बहुत पहले जब अंग्रेजो के नापाक कदम यहां, इस मुल्कपर पडे तो टिपू जैसे राजाओंने अपनी जानपर खेलकर देश को बचाया है। टिपू के वालिद हैदरअली का यह संदेश 'जीना चाहते हो तो मरना सिखो' हर पाठक के लिए महामन्त्र का महत्व रखना है।

ज्ञानदेवजी का 'अनुष्ठान' नाटक स्त्री-पुरुष सम्बन्ध तथा रिश्तोंपर कटुव्यंग्य करनेवाला सामाजिक नाटक है। नाटककार ने इस नाटक से इस बातकी ओर संकेत किया है कि पूरे विश्वास और धार्मिकता से किया हुआ कार्य अनुष्ठान है। विद्यमान यन्त्रयुग में मानव मशिन बन रहा है। उसकी भावनाएँ मर चुकी हैं तथा रिश्ते टूट रहें हैं। वह केवल यन्त्र बन रहा है। पुरुषों की स्त्रियोंपर सदियों से चलत आ रहे अन्याय, अत्याचार का चित्रण करके उन्होंने समस्त स्त्रियों की वेदनापर प्रकाश डाला है। इस नाटक के जरिए बहुत सारी सामाजिक समस्याओं को उद्‌घाटित किया है। पात्रों के नाम नहीं बल्कि नंबर देकर उन्होने उन पाठकों तथा दर्शकों को सावधान करना चाहा है जो स्त्रियोंपर अत्याचार करते आए हैं।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में सबसे सशक और हजारोबार मंचित होनेवाला उनका नाटक है 'नेफा की एक शाम' शुरुसे लेकर अन्त तक नाटक के अनेक पृष्ठोंपर राष्ट्रीयता तथा देशप्रेम की भावना मिलती है। नाटक का विषय चानी आक्रमणकारियों को लेकर है। जब जब देशपर आक्रमण हुए तब-तब यहाँ का हर सैनिक ही नही बल्कि हर एक युध्द खेलता है। यहाँ तक की सियाँग नदी के आसपास के पहाडी इलाके में रहनेवाले आदिमजातियों का मातई नाम की माँ अपने दो बेटों को देश के लिए कुर्बान होते अपनी आँखोंसे देखती है ओर होनेवाले पोते से प्रकाश की अभिलाषा रखती है। दो जवान बेटों के शहीद होनेपर भी वह कहती है कि यह शुरुआत है। डॉ. विजयकान्त धर दूबे 'वतन की आबरु' और 'नेफा की एक शाम' नाटकों के बारे

मे लिखते हैं - "नेफा की एक शाम, वतन की आबरु इनमे देशप्रेमकी महिमा उद्घाटित की गई है। ज्ञानदेवजीने उक्त दोनो नाटकों मे भारतीय जवानो का वीरता और नागरिकोंकी देशभक्ती की महिमा का अच्छा बोध कराया है।"१

'नेफा की एक शाम' हिन्दी नाटक साहित्य में मीलके पत्थतर का स्थान रखता है। स्वयं नाटककार इस नाटक के बारे मे कहता है - "मैं समझता हूँ यह नाटक मानव के उन सम्बन्धों की पुनर्व्याख्या करने का प्रयास करता है जो किसी देशांचल में बाह्य आक्रमण के समय होने चाहिए।"२

निष्कर्ष :

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना देखने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते है कि देश के प्रति पात्रों के जरिए उन्होने श्रध्दा, निष्ठा, गर्व, स्वाभिमान, भक्ति तथा राष्ट्रप्रेम को दिखाने में कामयाबी हासिल की है। ज्ञानदेव अग्निहोत्रीने नेता लोग, उनकी प्रवृत्तियाँ, प्रकार, अधिकारी, प्रशासक आदि वर्गो में स्थित राष्ट्रीय चेतना को दिखाकर राष्ट्र की प्रगति में बहुत बडा योगदान किया हैं। लेखक स्वयं राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित है इसलिए उनके हर नाटक मे 'अपनी बात' और 'भूमिका' में उनकी राष्ट्रीय भावना का परिचय हो जाता है। यही कारण है कि उनसे निर्मित हर नाटक के पात्र भी राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित उतनेही नजर आते हैं जितना कि लेखक खुद है।

अपने नाटकों में [illegible], गोपी जैसे आदिम जातियों के पात्रों को खडा करके उन्होनें इस देश के सामान्य से सामान्य नागरिककी तरफ इशारा करके यह सूचित करने की कोशिश की है कि यह सामान्य लगनेवाले लोग भी राष्ट्रीय चेतना से उतनेही प्रेरित है जितने की प्रशासक अधिकारी और नेता लोग। टिपू सुलतान, हैदरअली जैसे प्रशासक, फौजी जैसे अधिकारी, इलाहीबख्श जैसे नेताओं के माध्यम से उन्होंने राष्ट्र के लिए जानपर खेलनेवाले भारतीयों को दिखाया है। पशमीना, रेशमा जैसे पात्रों की निर्मिति करके भारतीय स्त्रियों का स्तर ऊँचा करके राष्ट्रीय चेतना में स्त्रियों को भी महत्व प्रदान किया है। ज्ञानदेवजी के सारे नाटकों को परखने, समझने के बाद मेरा यह नम्र निष्कर्ष है कि राष्ट्र के विकास में ज्ञानदेवजीके नाटक न सिर्फ इस युगके लिए अपितु आनेवाले 'कल' के लिए भी प्रेरणादायी साबित होंगे।

---

१. डॉ. विजयकान्त धरदुबे - साठोत्तरी हिन्दी नाटक - पृष्ठ-२८

२. ज्ञानदेव अग्निहोत्री - 'नेफा की एक शाम ' भूमिकासे उदधृत - पृष्ठ ५